February 2015 IJRSS Volume 5, Issue 1 ISSN: 2249-2496

वर्तमान पत्रकारिता व्यवस्था का राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव

सुधा पाल
शोधार्थिनी
सैन्य अध्ययन विभाग
डी0ए–वी कालेज, कानपुर

वर्तमान परिस्थिति में कठिनता है वह यह है कि अपना जीवन स्तर बरकरार रखते हुये नयी वैश्विक व्यवस्था को आकार देना, दूसरे राष्ट्र के हितों के साथ अपने राष्ट्रीय हितों का सन्तुलन बनाये रखना, वैश्विक आकांक्षाओं को धीरे–धीरे समाप्त और कम करना, राष्ट्रीय जनमत को बनाये रखना आदि। आधुनिक परिवेश में उदारता से ही जनमत तैयार किया जा सकता है और उदारता लोकतंत्र की आवश्यकता है और मीडिया इसका सशक्त माध्यम है। हमारे लोकतंत्र में मीडिया को स्वतंत्र रखा जाता है जो लोकतांत्रिक होने का द्योतक है। परन्तु सरकारें मीडिया को जादू की तरह उपयोग करती है और उस पर अपना नियंत्रण भी रखती हैं।

लोगों की आवश्यकता के अनुसार महत्वपूर्ण समाचार को निखार करके, उनको संक्षिप्त करके, उनका प्रसारण करके, मुद्दों का नाटकीय परिवर्तन करके आवश्यकता के अनुसार उनको तरोताजा तथा श्रोताओं को आकर्षिक करके टेलीविजन सभी लोगों को अपने साथ जोड़े रहता है।

चार्ल्स रिची के अनुसार ''मैं कभी नहीं समझ सका कि क्यों राजनयिकों और पत्रकारों के बीच अविश्वास और चेतावनी की भावना रहती है। जबकि दोनों के आपसी सहयोग से दोनों को लाभ हो सकता है।'' चार्ल्स रिची के शब्दों में पत्रकार का अर्थ उस व्यक्ति से है जिसके अन्दर राजनयिक के सभी गुण मौजूद हों, जो राष्ट्रपति और राष्ट्र के सचिव का विश्वासपात्र हो, राज्य की नाव पर बैठकर वह कैप्टन के साथ भोजन की मेज पर बैठ सके।

प्रसिद्ध विद्वान राजनयिक ''जार्ज कैनन'' ने कहा कि यह अमेरिकी नीति की घातक गलती है जो भावनात्मक प्रतिक्रिया के रूप में सामने आयी हैं। सोमालिया की परिस्थितियों का सभी टेलीविजन चैनलों पर अमेरिकी मीडिया में खुलासा हो चुका है।

आम धारणा उसी के अनुरूप प्रतिक्रिया देती है जो कुछ वह टेलीविजन पर देखती और सुनती है यह बहुत खतरनाक भी हो सकता है। और सहायक भी कुछ हद तक सोमालिया की तरफ पूरे विश्व के ध्यान का मुख्य कारण मीडिया कवरेज भी रहा। उसी समय सूडान में चल रही भुखमरी को नजरन्दाज कर दिया गया। यह प्रश्न बहुत ही साधारण परन्तु भंयकर है कि जब मीडिया का कैमरा चालू होता है तो इसका मतलब विदेशनीति अपना कार्य कर रही है।

अमेरिकी विदेश सचिव वारेन क्रिस्टोफर के अनुसार ''टेलीविजन एक आश्चर्य

वाली परिवेश है और कभी–कभी यह स्वतंत्रता का साधन भी है। परन्तु टेलीविजन के फोटो अमेरिकी विदेश नीति का ध्रुव तारा नहीं हो सकता।''

जार्ज कैनन ने के अनुसार ''झुण्ड में चलना, तथ्यों का दृश्य झलक लेना,कैमरे को आन–आफ करना, आज रहना और कल गायब हो जाना आदि ऐसी खबरे या सूचनायें नहीं है। जिसके आधार पर जटिल अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के लिये सही निर्णय निकाला जा सके।'' कैनन मैकडगल और क्रिस्टोफर सभी लोगों का सुझाव है कि टेलीविजन सरकार में बैठे जिम्मेदार लोगों को उनके कार्यो के लिये बाध्य कर रहा है।

अपनी पुस्तक 'द रोर आफ द क्राउड' में उन्होंने लिखा कि ''मै संचार क्रांति और नयी तकनीकों को धन्यवाद देना चाहता हूँ। राजनीति का पुराना विश्व अपने आप समाप्त होता जा रहा है। यह खेल अब व्यवसायिक प्रवृत्ति के लोगों द्वारा खेला जा रहा है। जो जन विचारधारा को ही व्यापक स्तर पर स्वीकार करते हैं और राजनेताओं की भर्त्सना करते हैं पत्रकारों की भर्त्सना करते हैं और कभी–कभी उन राजनयिकों को भी नहीं छोड़ते जिन्होंने उनका नियोजन कर रखा है।

''नेल लिखते हैं कि ''सभी टाम, डिक और हैरी अपनी कालीन पर चहलकद्मी कर रहे हैं। वे अब नीति के मुख्य अनुसंशक नहीं रह गये हैं। उनकी कला ऐसे समय की कला है जो समाप्त हो चुका है। राजपूत अब विलुप्त प्राय जीव बनते जा रहे हैं।''

ग्रैनेट्सट्न और बोथवेल ने कहा है कि टेलीग्राफ के दिनों में दूसरे देश में क्या हो रहा है इसके लिये आपको पत्र व्यवहार का इन्तजार करना पड़ता था, और अब किसी भी समय आप अच्छे समाचार पत्रों को पढ़कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

खाड़ी युद्ध के बाद बुश ने निश्चय कर लिया कि वे इरान के आंतरिक युद्ध में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। उन्होंने इसलिये ऐसा कहा कि मीडिया में यह बात फैल चुकी थी कि वे सद्दाम हुसैन का तख्तापलट करना चाहते हैं। फिर भी सद्दाम हुसैन ने कुर्दो पर आक्रमण किया और इस घटना का दृश्य इतना दुःखद था कि इसने बुश को प्रभावित होने के लिये मजबूर कर दिया और कुर्दो को सुरक्षित करने के लिये बुश को इराक में हस्तक्षेप करना पड़ा। जब अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने लेबनान के शरणार्थी शिविरों में फिलिस्तीनियों का नरसंहार टेलीविजन पर देखा तो उन्होंने शीघ्र ही एक मैरीन सेना की टुकड़ी भेज दी जो कि एक गलत सोच का अभियान था और इसका परिणाम दुःखद रहा। वियतनाम युद्ध के बाद से अब तक टेलीविजन की पहुंच और उसकी प्रभावकारिता कई गुना तक बढ़ गयी है।

मीडिया ने आम जनता की राय को गति देने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। जहां कहीं भी राष्ट्रीय हितों की बात आयी है तो मीडिया ने नीति निर्माण और उसके क्रियान्वयन के लिये पर्याप्त जनमत तैयार किया है। नीति निर्माताओं के लिये यह एक सशक्त असहजता हो सकती है। मीडिया द्वारा तैयार की गयी आम जनता की जीवन रक्षक प्रणाली असीमित स्तर तक बकवास होती है और जिन लोगों को समस्याओं के निराकरण के लिये प्रशिक्षण प्राप्त होता है उनको कोई स्थान नहीं मिल पाता। आम जनता नाजुक प्रशिक्षित विशेषज्ञों के बीच एक सांड की तरह है परन्तु लोकतांत्रिक परिवेश में आधारभूत स्तर पर कभी–कभी यह आवश्यक भी होता

है।

कार के आविष्कार ने हमारे शहरों और गांवों के भौतिक परिवेश को परिवर्तित कर दिया है। इसने गृह परम्परा, कस्बों, बाजारों, व्यक्तिगत यातायात और मनोंरजन के क्षेत्र में क्रांति ला दी है परन्तु टेलीविजन के आविष्कार ने लोगों की सोच को धरातल को परिवर्तित कर दिया है और कुछ हद तक हमारी शिक्षण पद्धति को भी परिवर्तित करने में योगदान दिया है।

मध्यकालीन यूरोप में गिरिजाघर चिंतन के केन्द्र होते थे। यहां से प्रसिद्ध कल्पनायें निकलती थीं। इसमें सभी चीजों का विश्लेषण होता था। आज लोकप्रिय कल्पनाओं का निर्धारण मीडिया की परिधि में होने लगा है और इसमें गहराई कम और विस्तार ज्यादा देखने को मिलता है।

मीडिया जैसा परिवेश आज से पूर्व कभी नहीं रहा। इसमें अतुलनीयता, प्रभावकारी अपील, सकारात्मक प्रोत्साहन, जीवनचर्या वाली प्रवृत्ति, मित्रता, अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को पार करने की क्षमता और वर्ग तथा साक्षरता आदि की सभी सीमाओं को लाघने की क्षमता है। यह संचार के क्षेत्र की ऐसी अतिशयोक्ति है कि पाषाण युग की तरह रहने वाले अफ्रीकी जनजातियां और विकसित देशों के उच्च वर्ग किसी भी टेलीविजन कार्यक्रम को एक साथ देख सकते हैं।

टेलीविजन देखने के अलावा लोगों का अन्य मुख्य कार्य मात्र काम करना और सोना है। विदेशी मामलों के मुद्दों पर लोगों को वही चीजे मिलती है जो उनके राजनेता सोचते हैं। जनता अब ऐसी भीड़ के रूप में नहीं रह गयी है जिसे उन नीतियों को बेचा जा सके जो पूर्व में निर्धारित हो चुकी हैं। जनता अब सक्रिय रूप से नीति निर्माण होते हुये देखना चाहती है और कभी–कभी इस नीति निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा भी बनना चाहती है। इसी प्रकार की छवि को प्राप्त करने को राजनीतिक विरोध करते हैं। इससे पता चल जाता है कि वर्तमान सरकार वफादार है कि नहीं और इससे सरकार की सक्षमता को चुनौती मिलती है। वर्तमान समय में टेलीविजन सूचना क्रांति और सर्वाधिक शोर शराबे वाली आम लोगों के लिये खिड़की है।

अनेकों प्रकार के हित समूहों द्वारा लगायी गयी अनेकों नयी तकनीके यह बदलाव ला चुकी हैं कि कोई राष्ट्र अपने राष्ट्र के विषय में कैसे बोलता है और कैसे जनमत तैयार किया जाता है। जेट यात्रा, फैक्स, सेल्युलर, सैटेलाइट, पोर्टबुल अपलिंक, इलेक्ट्रानिक डाटा ट्रांसफर, कम्प्यूटर नेटवर्क, आडियो वीडियो कैसेट, रेडियो और टेलीविजन आदि के माध्यम से व्यापारी, मुद्रा विश्लेषक, चिकित्सा विशेषज्ञ, वातावरण संरक्षक, विद्वान, लेखक, पत्रकार, राजनीतिक विश्लेषक, धार्मिक कट्टरवादी, नशीले पदार्थो के तस्कर, विज्ञापन और जन सम्बन्ध वाले लोग देश तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सूचना का प्रवाह हो रहा हैं। इनकी संख्या सरकार के नियंत्रण से अनेकों गुना है।

1991 के मास्कों तख्ता पलट के दौरान वफादार लोगों ने पश्चिमी देशों से सम्पर्क के लिये निजी और राष्ट्रीय कम्प्यूटर का प्रयोग किया। येल्तासिन के समर्थन में फैक्स, छोटे ट्रांसमीटर्स का भरपूर उपयोग हुआ। जब के.बी.जी. ने समाचार पत्रों और रेडियों स्टेशनों

को बन्द कर दिया तो येल्तासिन के समर्थकों ने छिपे तौर पर समाचार को रिकार्ड कर लेते थे। और उन्हें बी.बी.सी. और रेडियो लिबर्टी तक पहुंचा देते थे। और इनका पश्चिमी देशों से प्रसारण किया जाता था। और पुनः रूस में इसे सुना जा सकता था। एडुआर्ड शेवडिनाडजे ने बाद में कहा कि संचार क्राति की प्रशंसा की जानी चाहिये। सी.एन.एन. की प्रशंसा की जानी चाहिये।

यहां तक कि बन्द राष्ट्रों में भी पूर्व की अपेक्षा लोग सूचना तकनीक का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कर रहे हैं। चीन में छोटे फोन और सन्देश बीपर का अधिक से अधिक उपयोग हो रहा है। बीजिंग में हजारों मकानों के छत पर सैटेलाइट डिशों की भरमार है। जो बी.बी.सी. एशियन चैनल और सी.एन.एन. के कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण करते हैं। जब टेलीविजन के प्रसारण में तकनीकि जटिलता है, शार्ट वेब रेडियो का छोटा संस्करण इसके प्रभाव को बढ़ा दिया है। अयातुल्लाह खुमैनी का शाह द्वारा तख्ता पलट पूर्व प्रायोजित था। एक गुप्त और आवेशित आडियों कैसेट शाह द्वारा रिकार्ड किया गया और इसे सभी मुल्लाओं में फैला दिया गया जिससे कि शियाओं का विश्वास प्राप्त किया जा सके। किसी भी राष्ट्र में अनेकों हित समूह के लोग रहते है और सभी लोग नयी संचार तकनीक के सहारे अपनी पैरवी के लिये लामबन्दी करते रहते हैं।

मीडिया हमेशा विरोध, हिंसा और हृदय विदारक घटनाओं की भूखी रहती है। जिससे कि वह जल्द से जल्द अपनी छवि बना सके। टेलीविजन की इच्छा रहती है। कि वह अपने को सही तरीके से बेंच सके, विद्रोह का कारण ढूंढ सके और विश्व का ध्यान उस तरफ आकर्षित कर सके। सोमालिया की घटना में मात्र वहां के फोटो ही जिम्मेदार नहीं रहे जो लोगों के दिल को झकझोर दिये। इन तस्वीरों को यूनिसेफ के आउड्रे हेपबम और उत्तरी आयरलैण्ड के मैरी राबिन्सन ने अपने शब्दों से और अधिक प्रभावकारी बना दिया।

वारेन क्रिस्टोफर कहते हैं कि टेलीविजन को विदेश नीति का ध्रुव तारा नहीं होना चाहिये। परन्तु टेलीविजन के दृश्य पूर्ण रूप से व्हाईट हाउस से स्वीकार्य थे जब मीडिया ने खाड़ी युद्ध को भयानक वीडियो गेम के रूप में परिवर्तित कर दिया था और नब्बे के दशक में बुश की स्वीकृति के लिये भेजा गया था।

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के चुनाव के दौरान टेलीविजन के दृश्य स्वीकार्य होते हैं और मुख्य रूप से उन मामलों में जिनमें विदेश नीति बनाने की क्षमता होती है। टेलीविजन के माध्यम से राजनेताओं ने यह पता लगा लिया है कि किस तरह से जनमत की सैम्पलिंग लोगों की आवश्यकता के अनुसार योजनायें और अपनी छवि को बनाने के लिये मीडिया का प्रयोग किया जा सकता है। परन्तु यह यहीं पर समाप्त नहीं हो जाता। सत्तारूढ़ सरकार अपनी छवि बनाने की आदत नहीं छोड़ सकती। सरकार की नीतियों को छवि के रूप में प्रचारित किया जाता है। विदेश नीति निर्माण प्रतियोगी छवि का एक हिस्सा होता है। टेलीविजन पर दिखाई गयी छवि लोगों को प्रभावित करती है। विभिन्न मीडिया के माध्यम से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के अनुरूप राजनेता अपनी चुनावी रणनीति बनाते हैं।

सरकारें टेलीविजन की नकारात्मक शिकार नहीं हैं। जब कभी भी बिना किसी

असहजता और लोगों के आक्रामक विरोध के मार्ग्रेरेट थैचर, रोनाल्ड रोगन और जार्ज बुश युद्ध में भाग लेना चाहते थे तो वे टेलीविजन पर वही प्रसारित करवाते थे। जो वे फाकलैण्ड, ग्रेनेडा, पनामा और खाड़ी में चाहते थे। वे उनके लिये वियतनाम नहीं बनाना चाहते थे। जनता जो कि मीडिया के अनुसार विचारधारा में जीती थी। समाचार पत्रों की सुर्खियां उन्हें खुशी देती थी और मीडिया अपनी रिपोर्टिंग पर प्रसन्नता जाहिर करता था।

टेलीविजन सरकारों के लिये जीवनदायी और मृत्यु का कारण दोनों बन सकता है। परन्तु मीडिया का प्रयोग लक्ष्य को लेकर किया जाता है।

यहां पर टेलीविजन पर कड़ी निगरानी करके देखने पर कुछ अलग तथ्य भी सामने आते हैं। हम में से किसी को भी मीडिया संगठन, उसकी अलग पहचान आदि के विषय में निर्देश की आवश्यकता है। वर्तमान समय में प्रसिद्ध लोगों, सरकारों और आर्थिक व्यवसायों का उतार चढ़ाव, युद्ध क्रांतियों और प्राकृतिक तथा मानव जनित आपदाओं के विषय में मीडिया जो कुछ भी करती है और सुनाती है उसे ही समाचार कहते हैं। आधुनिक मीडिया इसी परिभाषा पर टिकी हुयी है। कुछ लोग इसको गम्भीरता से लेते हैं तो कुछ लोग इसे हल्के में लेते हैं। आज भी कुछ ऐसे समाचार पत्र हैं जो मि0 ट्रड्यू की आशाओं पर खड़े उतरते हैं और अच्छे राजनयिक की भूमिका निभाते हैं।

पत्रकारिता का कार्य गम्भीर और ओछापन दोनों से भरा है। इसके पत्रकारों का अपने कार्य से गम्भीर लगाव हो सकता है परन्तु वाणिज्यिक आवश्यकताओं को देखते हुये शीघ्र आकर्षण के लिये इसमें छिछलापन आ जाता है। क्योंकि आधुनिक मीडिया की यह प्रवृत्ति बन चुकी है। परन्तु सभी मामलों में ऐसा नहीं होता।

शीतयुद्ध ने विश्व की विचारधारा को ही बदल दिया। सरकारों, विद्वानों और विदेशी कार्यालयों की तरह मीडिया को भी विश्व को नये नजरियें से देखने के लिये बाध्य होना पड़ा। विशेष रूप से टेलीविजन मीडिया को अपने स्वभाव में मानवीयता लानी पड़ी। बर्लिन की दीवार के गिरते समय सूचना तकनीकों में अप्रत्याशित विकास हो चुका था और मुख्य रूप से यह विकास कम प्रकाश की जरूरतों वाले छोटे कैमरे के क्षेत्र में था।

टेलीविजन का सम्बन्ध लोगों से रहता है न कि उनके विचार से। शीत युद्ध की मानवीय घटनायें दृष्टि से ओझल थीं। शीतयुद्ध काल में प्रतिबन्ध था, टेलीविजन के स्टूडियों में बहस ज्यादा होती थी और कार्यालयी वार्ता आदि की घटनाओं से अधिक कुछ आवेशित करने वाले दृश्य नहीं दिखायें जाते थे क्योंकि सरकारों का अत्यधिक प्रतिबन्ध था। आज के समय में अंतर्राष्ट्री मीडिया कैमरों का मुख्य उद्देश्य मानवाधिकारों के हनन की घटनायें हैं चाहे वे किसी भी कारण से हों और घर में बैठे श्रोताओं से दया और सहानुभूति इकट्ठा करना है। इस प्रकार की कार्यशैली मीडिया की शायद ही कभी रही हो।

शीत युद्ध के दौरान लोगों की दबी हुयी आकांक्षाओं और हताशाओं को खत्म करने और शांति व्यवस्था कायम करके लोगों के जीवन स्तर को सुधारने में भी मीडिया ने बखूबी भूमिका निभायी है। शीत युद्ध में विकासशील और अविकसित राष्ट्र बहुध्रुवीयता की मांग कर रहे थे।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हस्तक्षेप और टकराव की भी परिस्थितियां बढ़ रही हैं। इसके पीछे नयी तकनीकों के विकास से पुरानी तकनीकों का बेकार हो जाना जिसके परिणाम स्वरूप औद्योगिक पुनर्गठन, वैश्विक मंदी, मुद्रा संग्रहण में कमीं, बढ़ती हुयी बेरोजगारी आदि कारण प्रमुख हैं। इन दशाओं में राजनीतिक व्यवस्थाओं पर यह दबाव बढ़ता जा रहा है कि वे इनका निराकरण करने के लिये राजनीतिक और आर्थिक प्रयास तेज करें। इसमें विदेश नीति के पुनरावलोकन के द्वारा भी समस्या का समाधान निकालने का प्रयास किया जा रहा है। इसीलिये वर्तमान विदेश नीतियां मानवीय जरूरतों के आधार पर तैयार की जा रही हैं और राष्ट्रीय हितों से आगे निकलकर निर्णय लिये जा रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में नैतिक भावनाओं के आगे राष्ट्रीय हितों के साथ समझौता हो रहा है। इस बहस से यह सुझाव मिलता है। कि अंतर्राष्ट्रीय मीडिया की ढ़ीला तोप हस्तक्षेप के लिये फॉयरिंग कर रहा है और लोगों के अन्दर उत्साह भर रहा है। कि सरकार को सक्रिय होने के लिये दबाव डालें।

सोमालिया में अभी सैन्य कार्यवाही अपने प्रथम चरण में ही थी कि बोस्निया पर भी आक्रमण का खतरा मड़राने लगा। सोमालिया में यूनाइटेड नेशन्स के मिशन को टेलीविजन पर देखने से पता चला कि इस कार्यवाही से वहां हिंसा और बढ़ गयी है और अमेरिकनों ने वहां हिंसा को बढ़ाने का कार्य किया, राजनीतिक पारा तेजी से ऊपर चढ़ा और वहां पर अस्थिरता का दौर आ गया। परिणाम स्वरूप राष्ट्रपति क्लिंटन को अपने लक्ष्य में बदलाव लाना पड़ा और वहां पर अमेरिकी उपस्थिति की समय सीमा निश्चित करनी पड़ी।

मीडिया द्वारा किसी भी तस्वीर की शक्ति को कई गुना बढ़ाया जा सकता है। मीडिया लोगों की भीड़ बहुत तेजी इकट्ठा करती है। इसका प्रभाव शक्कर की तरह रहता है। परन्तु इसका प्रभाव बहुत तेजी से उतरता भी है। इससे वास्तविकता बहुत शीघ्र ही स्पष्ट हो जाती है। और लोगों का हित स्पष्ट हो जाता है। लोगों को मालुम हो जाता है। कि सत्य क्या है। अमेरिकी राष्ट्रपतियों ने मीडिया के शक्कर जैसे प्रभाव को भुनाया। कमोवेश मीडिया और जनता दोनो को मजबूत नेतृत्व की जरूरत है। जो उनकी कार्यवाहियों में स्पष्ट राष्ट्रीय हितों को क्रियान्वित करने की क्षमता रखते हों। टेलीविजन युग के अतीत में यह बात हमेशा सत्य दिखती है। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री द्वारा विदेश नीति तैयार करने के लिये और सीमाओं पर चौकसी रखने के लिये पहले शेर की सवारी करनी पड़ती है। नेता जब अपनी शेर की सवारी पर होता है तो टेलीविजन विशाल फोन का कार्य करता है। जिससे उसे विश्लेषण बिक्री, नीतियों की आलोचना, और नीतियो पर सहयोगियों और विरोधियों के क्रियाओं–प्रतिक्रियाओं का सरकार और बाहर के वातावरण में आईना प्रस्तुत करता है। जब सरकार इन उपरोक्त बातों का ध्यान नहीं देती है तो टेलीविजन असहाय, निष्क्रय, शक्तिहीन, अतिप्रतिक्रिया आदि का डंका बजाने लगता है।

आधुनिक मीडिया लोगों का ध्यान आकर्षिक करके लोगों के अन्दर उबाल लाना चाहती हैं। और जनमत तैयार करके राजनीतिक नेताओं पर दबाव देना चाहती हैं। वे चाहते हैं कि कार्यवाही भावनाओं से नहीं बल्कि निर्णयों के आधार पर हो।

संयोग से संचार के साधनों के विकास ने शीत युद्ध काल के संघर्ष के दौरान

दबे हुये मुद्दों को आज प्राथमिकता से विश्व पटल पर लाकर रख दिया है। इन मुद्दों में वैश्विक पर्यावरण, उत्तरी और दक्षिणी देशों के जीवन स्तर तथा संसाधनों की असमानता और मानवाधिकार आदि शामिल है। ये ऐसे मुद्दे है जिन्हें मीडिया का कैमरा देख सकता है और बड़े पैमाने पर लोगों तथा सरकार का ध्यान आकर्षित कर सकता है। वर्तमान समय में कोई भी लोकतांत्रिक सरकार और राजनेता इस चीज से अनभिज्ञ नहीं हो सकते है कि मीडिया के पास जनमत को आकार देने की शक्ति है। वे मीडिया को सत्ता पाने के लिये तथा उसको बनाये रखने के लिये करते हैं। लोक तंत्र में कोई इतना ताकतवर और सम्पन्न नहीं होता कि लोग उसे पसन्द करने लगे। उनको अपने प्रतिद्वन्दियों तथा अन्य हित समूहों से उन्हीं मीडिया के माध्यमों से प्रतियोगिता करनी पड़ती है।

संसार के हर कोने से मिल रही खबरों के कारण मीडिया इतनी सक्षम हो गयी है। कि वह लोगों के जनमत को नाटकीय ढंग से परिवर्तित कर दें। राष्ट्रों को कभी–कभी ऐसी हरकतों को रोकने के लिये और राष्ट्रीयता को ध्यान में रखते हुये वक्तव्य अथवा समाचार को बदलने अथवा रूपान्तरित करने के लिये भारी कीमत चुकानी पड़ती है। वारेन क्रिस्टोफर की नजरों में यदि मीडिया को ध्रुव तारा नहीं बनाया जा सकता तो वैकल्पिक तारे की व्यवस्था भी रखनी होगी।

पूर्ववर्ती कालों की अपेक्षा आधुनिक काल में मीडिया सरकार पर इतना दबाव बनाये हुये है कि उसे जन मुद्दों की सूची पर तुरन्त और प्रभावकारी ढंग से अपना पक्ष रखने के लिये बाध्य होना पड़ता है। कभी–कभी मीडिया यह भी प्रचारित करने में सफल हो जाती है कि सरकार की सोच यह है कि बुद्धिमत्ता पर उसका एकाधिकार है। और राष्ट्रहित के मुद्दों पर केवल उसी की अवधारणा सही है। ऐसी स्थिति में सरकार विरोधी आवाज उठाना स्वाभाविक है। ‘‘बुडरों विल्सन’’ के शब्दों में उदार समझौता और जो उदारता से ही प्राप्त किया गया हो, आज के लिये सही बैठता है।

वर्तमान पत्रकारिता व्यवस्था का राष्ट्रीय सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव के परिवेश में किया गया है। सूचना क्रांति के इस आधुनिक दौर में पत्रकारिता आधुनिक तकनीकों से सुसज्जित हो चुकी है। और इसने पत्रकारिता के परम्परागत स्वरूप को नया आयाम दिया है। इस कार्य में टेलीविजन जगत का विस्तार, सैटेलाईट आधारित संचार व्यवस्था उच्च क्षमता के कैमरे, इन्टरनेट सुविधा, सोशल मीडिया, जन जागरूकता आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिये हैं। संचार तकनीकि की आधुनिक प्रणाली ने सूचनाओं के आदान प्रदान को सुगम और तीव्र बना दिया है। इसका परिणाम यह रहा है। कि समाचार पत्रों और प्रिंट मीडिया के अन्य संस्थानों ने भी अपने कार्य में बखूबी सुधार किया है जिससे ताजा समाचारों की उपलब्धता आसान हो गयी है। इन्टरनेट की सुविधा के कारण विश्व के सभी कोनों से सूचनायें तत्काल प्राप्त हो रही है।

सूचना क्रांति की तकनीकों ने राष्ट्र के नीति निर्माताओं की नीति निर्धारण और निर्णय प्रक्रिया को ही परिवर्तित कर दिया है। सरकार में कोई भी निर्णय आने से पूर्व उस पर तीव्र गति से प्रतिक्रियायें मिलनी प्रारम्भ हो जाती हैं जिसके परिणाम स्वरूप सरकार को अपना निर्णय बदलना पड़ता है अथवा उसमें संशोधन करना पड़ता है। विश्व के लोकतांत्रिक देशों में

यह प्रक्रिया अति तीव्र गति से प्रभावित करती है। इसलिये लोकतांत्रिक सरकारें अपना जनमत तैयार करने के लिये और अपनी सत्ता बनायें रखने के लिये लोगों की प्रतिक्रिया स्वरूप नीति निर्धारण करते हैं और उसका संचालन करते हैं। आधुनिक संचार के युग में अपनी सरकार बचाने के लिये और लोक मत हासिल करने के लिये कभी कभी सरकारों को राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रीय हित जैसे मुद्दों पर अपना निर्णय वापस लेना पड़ता है और पुर्नविचार करना पडता है। सरकारों को इसकी भारी कीमत भी चुकानी पड़ती है। देश–विदेश के कोने कोने तक संचार तकनीकी के फैलाव से सरकारों को सूचना प्राप्त करने और उसके अनुरूप नीति निर्माण करने में बहुत ज्यादा सहूलियत प्राप्त हुयी है। सूचना तकनीक के माध्यम से सरकारें अपनी नीतियों और सफलताओं को जन–जन तक प्रत्यक्ष रूप से पहुंचाने में सफल हुयी है। टेलीविजन, रेडियो और सोशल मीडिया तथा इन्टरनेट के माध्यम से लोगों तक सीधे अपनी बातों को रखने का अवसर सरकारों को मिल गया है। ऐसी दशा में सरकारें और उनका पूरा तंत्र अपने पूर्ववर्तियों की अपेक्षा अधिक सक्रिय और जबावदेही एवं उत्तरदायित्व के साथ कार्य कर रही हैं। इससे लोकतंत्र और अधिक मजबूत हुआ है।

संचार सुविधाओं के माध्यम से सरकारों को अपने पक्ष में जनमत तैयार करने का भी अवसर मिला है। अक्सर यह देखा गया है। कि भारत में जब कभी भी राष्ट्रीय सुरक्षा के खतरे की बात सामने आयी है। और या फिर किसी आपदा ने अपना पैर फैलाया है उस समय मीडिया ने जनमत और जनसहयोग प्राप्त करने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। चाहे भारत पाकिस्तान या भारत चीन युद्ध का समय रहा हो, कारगिल संघर्ष का समय रहा हो, गुजरात में भूकम्प की त्रासदी रही हो या सुनामी का कहर रहा हो, हर मोर्चे पर भारतीय मीडिया ने तंत्र सक्रिय सहयोग में अभूतपूर्व योगदान दिया है। युद्ध के दौरान किस प्रकार से मीडिया और सरकार ने मिलकर आंतरिक स्तर पर लोगों के अन्दर उत्साह भरने और लोगों से सहयोग प्राप्त करने का कार्य किया है। युद्ध के दौरान सूचना युद्ध के क्षेत्र में भी हमारे देश की मीडिया ने शत्रु के दुष्प्रचार और अफवाह को मात दिया तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व जनमत को प्राप्त करने और कूटनीतिक जीत हासिल करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये लोगों को जागरूक करने और इस संघर्ष में भाग लेने के लिये उत्सुक करने में निश्चित रूप से भारतीय पत्रकारिता का महान योगदान रहा है। अपने इस कर्तव्य में भारतीय पत्रकारों ने यह साबित कर दिया कि कलम तलवार से ज्यादा ताकतवर होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद और सूचना तकनीकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास के पश्चात किस तरह से भारतीय मीडिया का स्वरूप और कार्यक्षेत्र बदला है। टेलीविजन, कम्प्यूटर, मोबाइल आदि के क्षेत्र में हुये विकास ने लोगों को एक दूसरे से जोड़ने में बहुत तीव्र गति से कार्य किया है। पत्रकारिता के कार्य एवं महत्व को भी पर्याप्त प्रकाश देने का प्रयास हुआ है जिससे कि इसकी महत्ता को विस्तृत ढंग से समझा जा सके।

संदर्भ–ग्रन्थ सूची

- ए. विलियम एण्डरसन (1969) डिजैस्टर वार्निंग एण्ड कम्यूनिकेशन प्रोसेस इन टू कम्यूनिटीज
- एन.ई. वर्नहर्ड (1999) यू.एस.टी.वी. न्यूज एण्ड कोल्ड वार प्रोपगैण्डा, 1947—1960, न्यूयार्क, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी
- एस.एल. करूथर्स (2002), द मीडिया एट वार : कम्यूनिफेट एण्ड कान्फ्लिक्ट इन द ट्वेन्टीथ सेन्चुरी : न्यू यार्क : सेन्ट मार्टिन्स प्रेस
- एम. दिडसन और जे. स्टैनियर (1998) वार एण्ड द मीडिया : ए रैण्डम सर्च लाईट, न्यूयार्क, न्यूयार्क यूनिवर्सिटी प्रेस
- कारगिल कांफ्लिक्ट टाईमलाईन, बी.बी.सी. न्यूज, 1997—07—13, रिट्राईव्ड 2012/06/15
- कारगिल रिपोर्ट सोज द वे इण्डियन एक्सप्रेस, रिट्राइल्ड 2009/10/20
- कारगिल वार, नीड टू लर्न स्ट्रैटेजिक लेसन्श जनरल (सेवानिवृत्त) वी.पी. मलिक, इण्डिया ट्रिव्यून आर्टिकल 27 जुलाई 2011
- विलियम बी. केनेडी, द मिलिटरी एण्ड द मीडिया — व्हाई द प्रेस कैन नाट बी. ट्रस्टेड टू कवर ए वार, प्रेगर पब्लिशर्स, वेस्ट पोर्ट, यू.एस.ए.
- ए नाईट (2003) द बैटिलफिल्ड आफ हाईज : द इराक वार एण्ड द प्रेस, पब्लिक रिकार्ड, 15 अप्रैल
- एम मैकमिलन (1964) अन्डर स्टैडिंग मीडिया : द इक्सटेंशनस ऑफ मैन न्यू यार्फ मैकग्रा—हिल
- ओवर सोल्जर्स किल्ड इन कारगिल, शरीफ, द हिन्दू, रिट्राइब्ड 2009/05/20
- एस. रैम्पटन और जे. स्टौब (2003) वीपन ऑफ मास डिसेप्शन : द यूजेज ऑफ प्रोपगैण्डा इन बुश स वार आन ईराक, लन्दन, राबिन्सन
- ए.टी. थ्राल (2002) वार इन द मीडिया एज, एन. जे. क्रेसकिल, हैम्पटन प्रेस
- वेन्जर डेनिस (1985) मास मीडिया एण्ड डिजैस्टर्स, प्रिलिमिनरी पेपर 98 न्यूयार्क डिजैस्टर रिसर्च सेन्टर
- द इण्डियन एक्सप्रेस, 16 जनवरी 2012